Date 21.5.20

DII (Hons.), Paper – III

Dr. Kumari Kavita
Associate Professor
Marwari College, Darbhanga

Topic — Topographical Aspect of mind

फ्रॉयड के अनुसार मन का स्वरूप गत्यात्मक है तथा इसके कई पहलू हैं। इन पहलुओं का ज्ञान विशेष रूप से संघर्ष की हालत में होता है जब व्यक्ति एक से अधिक समान एवं विरोधी प्रेरकों का शिकार बन जाता है तो मन के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान स्पष्ट रूप से होने लगता है। इसके साथ साथ व्यक्ति में परिवर्तन की सम्भावना भी बढ़ जाती है। विभिन्न मानसिक विकृतियाँ वस्तुतः व्यक्ति के परिवर्तित रूप हैं। जिनका मौलिक कारण मानसिक संघर्ष है।

फ्रॉयड के अनुसार मन के दो पहलू या अवस्थाएं हैं, जिन्हें आकारात्मक पहलू (topographical aspect) तथा गत्यात्मक पहलू (dynamic aspect) कहते हैं। हम यहाँ इन दोनों की चर्चा करेंगे।

फ्रॉयड ने मन के आकारात्मक पहलू को तीन भागों में विभाजित किया है — (क) चेतन (conscious) (ख), अर्द्धचेतन (Sub-conscious) तथा (ग) अचेतन (Unconscious)। वैसे तो फ्रॉयड के पहले भी विद्वानों ने मन के विभिन्न चेतन तथा अचेतन पहलुओं की चर्चा की है, किन्तु उनका विचार वैज्ञानिक नहीं था। सर्वप्रथम फ्रॉयड ने ही वैज्ञानिक ढंग से अचेतन की व्याख्या की तथा इसके महत्व पर प्रकाश डाला।

(क) चेतन (Conscious) :— चेतन आकारात्मक पहलू का

वह भाग है, जिसका सम्बन्ध वर्तमान से है। I. F. Brown के अनुसार, "चेतन मन का वह भाग है, जिसमें ऐसी इच्छाएं तथा विचार रहते हैं जिनका तात्कालिक ज्ञान व्यक्ति को रहता है।" जैसे - परीक्षा भवन में परीक्षार्थी जिस प्रश्न का उत्तर लिखता रहता है, उससे सम्बन्धित सभी बातों का ज्ञान उस समय उसे रहता है। अतः वे सारी बातें चेतन मन में ही रहती हैं।

(ख) अर्द्धचेतन (Sub-conscious) :— अर्द्धचेतन आकारात्मक पहलू का दूसरा भाग है। इसमें ऐसी इच्छाएं तथा विचार रहते हैं, जिनका तात्कालिक ज्ञान तो व्यक्ति को नहीं रहता, लेकिन साधारण अन्तर्निरीक्षण द्वारा ज्ञान हो जाता है।

(ग) अचेतन (Unconscious) :— अचेतन मन के आकारात्मक पहलू का सबसे बड़ा भाग है। जिसप्रकार बर्फ के टुकड़े का बड़ा भाग पानी में डूबा रहने के कारण दीख नहीं पड़ता उसीप्रकार मन के इस बड़े भाग का ज्ञान अचेतन होने के कारण हमें नहीं हो पाता है।

कुछ लोगों का मत है कि अचेतन मन का वह भाग है, जिसमें निष्क्रिय एवं व्यर्थ की मानसिक क्रियाएं रहती हैं। इन क्रियाओं का जीवन में कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं रहता है। किन्तु फ्रायड ने सर्वप्रथम इस मत का विरोध किया और बतलाया कि अचेतन मन में सिर्फ निष्क्रिय या व्यर्थ नहीं होते हैं, बल्कि सक्रिय होते हैं और उनका प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ता है।

अचेतन मन के अस्तित्व के प्रमाण

(Proofs for the existence of the unconscious mind)

अचेतन मन के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए फ्रायड ने कई आधारों का उल्लेख किया है जो इसप्रकार हैं :—

1) सम्मोहन (Hypnosis) :— फ्रायड ने सम्मोहन के आधार पर अचेतन के अस्तित्व को सिद्ध किया है। फ्रायड Vienna के डाक्टर

डॉक्टर थे। उन्होंने हिस्टीरिया की बीमारी में सम्मोहन का प्रयोग किया और देखा कि सम्मोहित अवस्था में रोगी ऐसी बातों या कार्यों को करता था, जिनको उसने न तो सम्मोहित अवस्था के पहले किया था और न बाद में ही कर सकता था। इससे फ्रायड को एक संकेत मिला कि मन का एक ऐसा भाग अवश्य है, जिसका सम्बन्ध ऐसी बातों से है, जिनकी चेतना व्यक्ति को नहीं रहती है। मन के इसी भाग को फ्रायड ने अचेतन कहा।

2) सम्मोहन के बाद की अवस्था (Post hypnotic stage) :— सम्मोहन की अवस्था में सम्मोहनकर्ता के द्वारा जो भी आदेश व्यक्ति को दिया जाता है, वह उस आदेश का पालन सम्मोहित अवस्था के समाप्त हो जाने के बाद भी करता है, लेकिन वह इसका कारण नहीं बतला सकता। सम्मोहित अवस्था में अचेतन सक्रिय एवं क्रियाशील रहता है। इसलिए अचेतन सम्मोहनकर्ता के आदेश के अनुसार क्रिया करवा लेता है, परन्तु सम्मोहित व्यक्ति अचेतन की बातों को चेतन में लाने में असमर्थ रहता है। इससे भी अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित होता है।

3) स्वप्न (Dream) :— स्वप्नों के आधार पर भी अचेतन का अस्तित्व प्रमाणित किया जा सकता है क्योंकि निद्रावस्था में स्वप्न देखता है। नींद टूटने पर कुछ स्वप्नों को वह याद रखता है और कुछ को भूल जाता है। हम जानते हैं कि नींद की हालत में चेतन निष्क्रिय हो जाता है। चेतन मन के निष्क्रिय होने से उसकी लगाम ढीली पड़ जाती है फलतः अचेतन क्रियाशील हो जाता है और स्वप्न के रूप में इच्छाओं की पूर्ति होने लगती है।

4) दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ (Psycho-pathology of everyday life) :— प्रायः दैनिक जीवन में हमसे

भूलें होती रहती हैं। लिखने पढ़ने, पहचानने, बोलने इत्यादि में भूलें होती रहती हैं। इन भूलों के पीछे कौन सी मानसिक क्रिया काम करती है, इसका ज्ञान व्यक्ति को नहीं रहता है। दैनिक जीवन में व्यक्ति बहुत सी ऐसी क्रियाओं को करता रहता है जिनको वह निरर्थक समझकर उसपर ध्यान तक नहीं देता है। जैसे - चाभी के गुच्छे को घुमाना, पैर हिलाना, नाखून को दांत से काटना इत्यादि। फ्रायड का कहना है कि ये क्रियाएं निरर्थक नहीं बल्कि सार्थक हैं। वस्तुतः ये क्रियाएं अचेतन मन की उपज हैं। इन दैनिक भूलें या निरर्थक क्रियाओं के द्वारा अचेतन की इच्छाओं की तृप्ति होती है। इससे भी अचेतन का अस्तित्व सिद्ध होता है।

5) जागृतावस्था (Awakening) :— जब व्यक्ति सो जाता है तो फिर एक निश्चित समय के बाद ही उठता है। प्रायः व्यक्ति रात में 9-10 बजे सोता है और 4-5 बजे जग जाता है। इसके बीच या तो वह जागता नहीं है, या बहुत कम जागता है। लेकिन जब किसी दिन उसे बारह बजे रात को किसी काम से उठना रहता है, तो ठीक समय पर बारह बजे उसकी नींद टूट जाती है और वह अपना काम कर लेता है। प्रश्न यह है कि उस रात उसकी नींद क्यों टूट जाती है? इस प्रश्न का उत्तर चेतना के आधार पर सम्भव नहीं है, क्योंकि नींद की हालत में चेतना भी मानो सो जाती है। इसका उत्तर अचेतन मन के आधार पर भी ही दिया जा सकता है। नींद की हालत में जब चेतना निष्क्रिय हो जाती है तो अचेतन क्रियाशील हो जाता है और वही व्यक्ति को उचित समय पर जगा देता है। चूंकि उसके जग जाने का कारण अचेतन मन में रहता है, इसलिए इसकी चेतना व्यक्ति को नहीं रहती है।

To be continued

कुमारी कविता
मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा